Name of Scholar : Shradha

Name of Supervisor : Dr. Chandradev Yadav

Department : Department of Hindi, Jamia Millia Islamia

Tital of the Thesis : Samkaleen Hindi Upanyason Me Lok Sanskriti Ke Vibhinn Roop (1990 Se Adyatan)

ABSTRACT

'लोक' शब्द का अर्थ बहुत व्यापक है। 'लोक' एक ऐसी अवधारणा है जिसकी कुछ निजी परंपराएं होती हैं। संस्कृति, सामाजिक परम्परा से प्राप्त चिंतन, अनुभव और व्यवहार की समस्त रीतियों का समावेश लोक में दिखाई देता है। लोक संस्कृति मनुष्यों के मानव के विविध क्रिया–कलापों, परम्पराओं, रीति–रिवाजों, विचारों, आस्था–विश्वासों, संस्कारों आदि की सामूहिक अभिव्यक्ति है। लोक संस्कृति के अंतर्गत जनजीवन से संबंधित सभी आचार–विचार, रहन–सहन, विधि–निषेध, प्रथा–परंपरा, धर्म–कर्म, पूजा–पाठ, खान–पान, वेश–भूषा, और यज्ञ–अनुष्ठान आदि आते हैं। लोक मिथकीय सन्दर्भों से भी जुड़ा होता है।

भूमण्डलीकरण ने भारत में पश्चिम की संस्कृति को बढ़ावा दिया है। हमारी लोक संस्कृति भी इससे अछूती नहीं रही है। आधुनिक पहनावे, खानपान और सुख–सुविधाओं के जरिये यह संस्कृति हमारे लोक को पूरी तरह आक्रांत किये हुए है। वेशभूषा या जीवनशैली में पश्चिमी संस्कृति की यह आक्रामक उपस्थिति हमारी चिन्ता का उतना विषय नहीं है, जितना उपभोक्तावाद, नक्सलवाद, ईष्या–द्वेष और असहिष्णुता के बढ़ते खतरों से है। शिक्षा और प्रत्येक स्तर पर मिले आरक्षण तथा राजनैतिक जागरूकता ने इस परिवर्तन में अहम भूमिका निभाई है। इस तरह लोक की संरचना पहले से बदल गई है। यह बदलाव लगभग सभी समकालीन उपन्यासों में नजर आता है। जातीय कट्टरवादिता से संबंधित रोटी और बेटी के संबंध में भी इधर बड़ी तेजी से बदलाव आये हैं। आधुनिक युग में जीवन शैली में परिवर्तन के कारण रोटी के संबंध में भेदभाव तो लगभग खत्म हो गया है, लेकिन बेटी के संबंध में यह भेदभाव अभी भी अटूट है। अन्तर्जातीय विवाह अभी भी अपवाद स्वरूप होते हैं।

लोक संस्कृति हमारे परखे हुए ज्ञान की संस्कृति है। इसलिए नई चीज को अपनाने में लोक को समय लगता है, लेकिन वेशभूषा और खानपान के मामलों में यह बात बिल्कुल अलग है। नइ और पुरानी परंपराओं और आस्था–विश्वासों के मेल से आज की हमारी वर्तमान लोक संस्कृति का रूप निर्धारित हुआ है। यदि ऐसा न होता तो टैटू, जो आज इतना प्रचलित है, वह हमारी लोक संस्कृति का हिस्सा कैसे होता दरअसल वह 'गोदना' का ही एक रूप है। इसी तरह लिव–इन रिलेशन के बीज भी भारत की आदिवासी

This document was created using SOLIDPDFTools To remove this message, purchase the product at www.SolidDocuments.com

संस्कृति में विद्यमान रहे हैं। पहाड़ों में पूर्णमासी के उत्सव में वहाँ की स्त्रियाँ और पुरुष सार्वजनिक रूप से अपने प्रेम की अभिव्यक्ति करते हैं और फिर बिना शादी के एक साथ रहने लगते हैं। 1990 के बाद के लिखे उपन्यास हमारी लोक संस्कृति को प्रस्तुत नहीं करते, बल्कि वे परंपराओं के बनने की परिस्थितियों की भी पड़ताल करते हैं। बहुत सी परंपराएं गलत भी बन गई थीं, जिनका खामियाजा लोक स्वयं भुगत रहा है। लेकिन परंपराओं को ध्यान से देखने पर पता चलता है कि इन्हें कुछ प्रभावशाली वर्गों ने अपने फायदे के लिए कमजोर वर्गों के शोषण हेतु बनाया था।

आर्थिक क्षेत्र में कृषि से मोहभंग और पलायन वे प्रमुख प्रवृत्तियाँ हैं, जो इन उपन्यासों में व्यक्त हुई हैं। लेकिन कुछ उपन्यासों में इस बात का उल्लेख किया गया है कि कुछ पढ़े–लिख युवा कृषि को अपना व्यवसाय बनाने के लिए गाँव में लौटते हैं। यह कितना सत्य है, इसे बता पाना मुश्किल है। इसके विपरीत ज्यादातर युवकों में खेत बेचकर अध्यापक बनने या कोई छोटी–मोटी नौकरी पाने की चाह में दलालों को घूस देने की प्रवृत्ति बढ़ी है, जिससे लोक समाज की जमीन के प्रति लगाव कम हुआ है। इस के लिए प्रशासनिक स्तर पर व्याप्त भ्रष्टाचार जिम्मेदार है। कुछ लोगों का मानना है कि राजनीति में सभी जातियों को बराबरी का अवसर मिलेगा तो यह भ्रष्टाचार खत्म हो जाएगा, लेकिन आश्चर्य तब होता है जब सत्ता के नशे में यह निम्न वर्ण का चरित्र भी बदल जाता है। अपनी ही जमीन से उसका संबंध न के बराबर रह जाता है। इसीलिए कुछ उपन्यासों में ऐसे स्वर भी मिलते हैं कि आज सवर्णों के खिलाफ ही नहीं बल्कि ताकतवर अवर्णों के खिलाफ भी आवाज उठाने की जरूरत है।

लोक में यौन वर्जनाओं की वजह से स्त्रियों का शोषण होता आया है, जिसके चित्र हमें इन उपन्यासों में देखने को मिलते हैं। मैत्रेयी पुष्पा की दृष्टि में इसका समाधान 'देह की स्वतंत्रता' में है, जबकि अन्य उपन्यासकार इसकी वस्तुस्थिति को सामने रखकर मौन हो जाते हैं। सामाजिक परिस्थितियों के विवेचन से स्पष्ट होता है कि इसका समाधान स्त्री की आर्थिक स्वतंत्रता में है, क्योंकि इससे स्त्रियों पर पुरुषों का वर्चस्व कम होगा और स्त्री अपनी आर्थिक सबलता के आधार पर कम से कम शोषण का शिकार होगी।

समकालीन हिंदी उपन्यासों में समाज में घट रही छोटी बड़ी घटनाओं के चित्र मिलते हैं। इन उपन्यासों में आज का लोक हृदय धड़कता है। सभी लेखकों ने अपनी सीमाओं में लोक के चरित्र को उद्घाटित किया है। लेकिन हमारे लोक में अभी बहुत कुछ ऐसा है जो इन उपन्यासों में नहीं दिखाई देता। इसलिए लोक के इन अछूते प्रसंगों को भी उपन्यासों की शक्ल में समाज के सामने आना जरूरी है तथा उनकी समीक्षा भी अनवरत चलनी चाहिए ताकि लोक के बदलते स्वरूप को पहचाना जा सके।

This document was created using SOLIDPDFTools To remove this message, purchase the product at www.SolidDocuments.com